स्याद्वाद

बाल शिक्षा

भाग – २

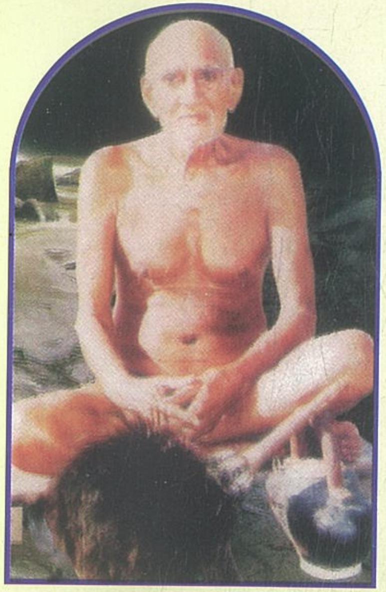

आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज

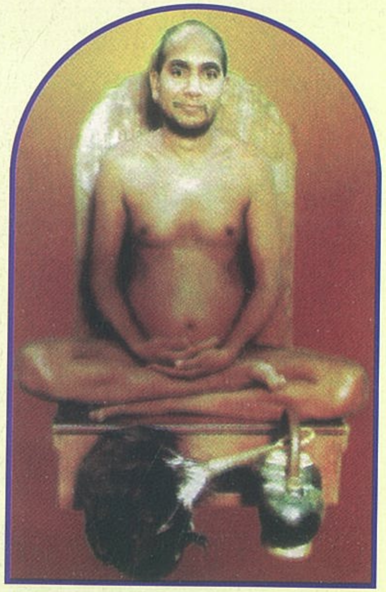

आचार्य श्री 108 भरतसागर जी महाराज

गणिनी आर्यिका 105 श्री स्याद्वादमति माता जी

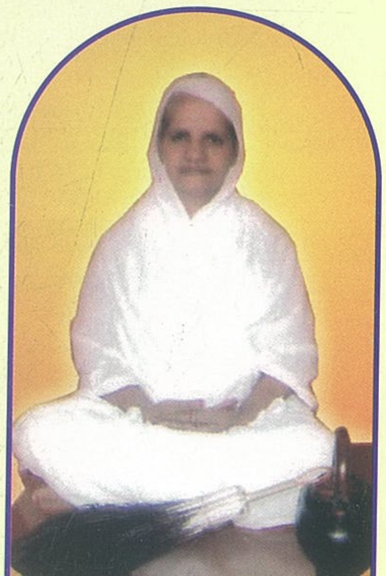

गणिनी आर्यिका 105 श्री यशस्विनी माता जी

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

स्याद्वाद बाल-शिक्षा

दूसरा भाग

✻ लेखिका ✻

गणिनी आर्यिका श्री 105 स्याद्वादमती माताजी

भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद्

भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद् पुष्प संख्या- 138

आशीर्वाद : प.पू. आचार्य श्री 108 विमलसागरजी महाराज

प. पू. आचार्य श्री 108 भरतसागरजी महाराज

संयोजन : आर्यिका श्री 105 यशस्विनी माताजी

ग्रन्थ : स्याद्वाद बाल शिक्षा (भाग-2)

लेखिका : गणिनी आर्यिका श्री 105 स्याद्वादमती माताजी

संस्करण : तेईसवाँ

वीर निर्वाण सम्वत् 2041 सन् 2015

सर्वाधिकार सुरक्षित :

प्रकाशक : भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद्

पुस्तक प्राप्ति स्थान : (1) गणिनी आर्यिका यशस्विनी माताजी संघ

(2) आचार्य विमल भरत साहित्य सदन
सम्मेदशिखरजी

(3) श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर
डी-210, श्यामपार्क एक्सटेंशन
महावीर वाटिका, साहिबाबाद (उ.प्र.)

मूल्य : 12/- रुपये

मुद्रक : सुभाष ऑफसेट
मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)
फोन : 01463-242121

अनुक्रमणिका

	प्रार्थना	३
१.	नवदेवता स्तवन	४
२.	दर्शन स्तुति	६
३.	कर्त्तव्य	७
४.	पंचपरमेष्ठी के मुलगुण	११
५.	व्यसन	२१
६.	भावना	३१
७.	मेरी भावना	३५
८.	जिनवाणी स्तुति	३७
९.	दर्शन पाठ	३७
१०.	जिनवाणी भक्ति	३९

•

प्रार्थना

हे वीतराग स्वामी, नित प्रार्थना हमारी ।
अज्ञान को तजें हम, बन ज्ञान के पुजारी[२] ।।

हिंसादि पाप तजकर
सत्पथ पे हम चलेंगे,
क्रोध कषाय तजकर ।
समभाव हम धरेंगे ।।१।। हे वीतराग०

माता पिता की सेवा
भक्ति गुरुजनों की,
प्रातः सुजल्दी उठकर ।
नित करेंगे ईश भक्ति ।।२।। हे वीतराग०

दो नाथ हमको शक्ति
तुम सम बनेंगे हम भी,
दुःखियों की सेवा करके ।
पायेंगे आत्म शक्ति ।।३।। हे वीतराग०

नव देवता स्तवन

दोहा

परमेष्ठी पांचों नमूं, जिनवाणी उरलाय ।
जिन मारग को धारकर, चैत्य चैत्यालय ध्याय ॥

(तर्ज—अहो जगत् गुरु देव सुनियो..................)

अरिहन्त प्रभु का नाम, है जग में सुखदाई ।
घाति चतु क्षयकार, केवल ज्योति पाई ।
वीतराग सरवज्ञ, हित उपदेशी कहाये ।
ऋद्धि-सिद्धि सब पाय, जो नित भक्ति सुध्यावे ॥१॥

सिद्ध प्रभु गुणखान, सिद्धि के हो प्रदाता ।
कर्म आठ सब काट, करते मुक्ति वासा ॥
शुद्ध बुद्ध अविकार, शिव सुखकारी नाथा ।
ऋद्धि-सिद्धि सब पाय, जो नित नावे माथा ॥२॥

आचारज गुणकार, पञ्चाचार को पाले ।
शिक्षा दीक्षा प्रधान, भविजन के दुख टाले ॥
अनुग्रह निग्रह काज, मुक्ति मारग चलते ।
ऋद्धि-सिद्धि सब पाय, जो आचारज भजते ॥३॥

ज्ञान ध्यान लवलीन, जिनवाणी रस पीते ।
अध्ययन शिक्षा प्रदान, संघ में जो नित करते ॥
रत्नत्रय गुणधाम, उपदेशामृत देते ।
ऋद्धि-सिद्धि सब पाय, जो नित उवज्झाय भजते ॥४॥

दर्शन ज्ञान चरित्र, मुकती मार्ग कहाये ।
तिनप्रति साधन रूप, साधु दिगम्बर भाये ॥
विषयाशा को त्याग, निज आतम चित पागे ।
ऋद्धि-सिद्धि सब पाय, जो नित साधु ध्यावे ॥५॥

तत्व द्रव्य गुण सार, वीतराग मुख निकसी ।
गणधर ने गुणधार, जिनमाला इक गूंथी ॥
'स्याद्वाद' चिह्न सार, वस्तु अनेकान्त गाई ।
ऋद्धि-सिद्धि सब पाय, जो जिनवाणी ध्याई ॥६॥

सम्यक् श्रद्धा सार, देव शास्त्र गुरु भाई ।
सम्यक् तत्त्व विचार, सम्यक् ज्ञान कहाई ॥
सम्यक् होय आचार, सम्यक् चारित गाई ।
ऋद्धि-सिद्धि सब पाय, जो जिन मारग धाई ॥७॥

वीतराग जिनबिम्ब, मूरत हो सुखदाई ।
दर्पण सम निजबिम्ब, दिखता जिसमें भाई ॥
कर्म कलंक नशाय, जो नित दर्शन पाते ।
ऋद्धि-सिद्धि सब पाय, जो नित चैत्य को ध्याते ॥८॥

वीतराग जिनबिम्ब, कृत्रिमाकृत्रिम जितने ।
शोभत हैं जिस देश, हैं चैत्यालय उतने ।
उन सबकी जो सार, भक्ति महिमा गावे ।
ऋद्धि-सिद्धि सब पाय, जो चैत्यालय ध्यावे ॥९॥

दोहा

नव देवता को नित भजे, कर्म कलंक नशाय ।
भव सागर से पार हो, शिव सुख में रम जाय ॥

नोट—प्रतिदिन प्रातः पाठ करने से जीवन सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त होता है ।

२. दर्शन स्तुति

ब्र० ज्ञानानन्द

अति पुण्य उदय मम आया, प्रभु तुमरा दर्शन पाया ।
अब तक तुमको बिन जाने, दु:ख पाये निज गुण हाने ।।
पाये अनंते दु:ख अब तक, जगत को निज जानकर ।
सर्वज्ञ भाषित जगत हितकर धर्म नहिं पहिचानकर ।।
भवबंध कारक सुखप्रहारक, विषय में सुख मानकर ।
निज पर विवेचक ज्ञानमय सुखनिधि सुधा नहिं पानकर ।।१।।

तव पद मम उर में आये, लखिकुमति विमोह पलाये ।
निज ज्ञान कला उर जागी, रुचिपूर्ण स्वहित में लागी ।।
रुचि लगी हित में आत्म के सतसंग में अब मन-लगा ।
मन में हुई अब भावना, तव भक्ति में जाऊँ रँगा ।।
प्रिय वचन की हो टेव गुणि गुणगान में ही चितपगै ।
शुभ शास्त्र का नित हो मनन, मन दोषवादनतै भगै ।।२।।

कब समता उर में लाकर, द्वादश अनुप्रेक्षा भाकर ।
ममता मय भूत भगाकर मुनिव्रत धारूँ वन जाकर ।।
धरकर दिगम्बर रूप कब, अठवीसगुण पालन करूँ ।
दोबीस परिषह सह सदा, शुभधर्म दश धारन करूँ ।।
तप तपूँ द्वादशविधि सुखद शुभ नित बंध आस्त्रव परिहरूँ ।
अरु रोकि नूतन कर्मसंचित, कर्मरिपु को निर्जरूँ ।।३।।

कब धन्य सुअवसर पाऊँ, जब निज में ही रमजाऊँ ।
कर्तादिक भेद मिटाऊँ, रागादिक दूर भगाऊँ ।।
कर दूर रागादिक निरंतर, आत्म को निर्मल करूँ ।
बल ज्ञान दर्शन सुख अतुल, लहि रचित क्षायिक आचरूँ ।।
आनंदकंद जिनेन्द्र बन उपदेश को नित उच्चरूँ ।
आवैं 'अमर' कब सुखद दिन जब दुखद भवसागर तिरूँ ।।४।।

३–कर्त्तव्य

प्रश्न १– प्रतिदिन प्रातः उठकर हमें क्या करना चाहिए ?

उत्तर– प्रतिदिन प्रात: जल्दी उठकर नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ना चाहिये । फिर अपने दोनों हाथों को मिलाकर अँगुलियों के २४ पोरों पर २४ तीर्थंकर भगवान का नाम लेना चाहिए । पंचपरमेष्ठी भगवान का ध्यान करना चाहिये ।

प्रश्न २– प्रतिदिन हमारा क्या कर्त्तव्य है ?

उत्तर– प्रतिदिन देव दर्शन करना हमारा कर्त्तव्य है । अपने से बड़े पूज्य पुरुष माता-पिता-भाई आदि को भी नमस्कार करना चाहिये । बड़ों को नमस्कार करते समय जय-जिनेन्द्र बोलना चाहिए ।

प्रश्न ३– देवदर्शन कब करना चाहिए ?

उत्तर– प्रतिदिन नित्य क्रिया (स्नानादि) से निर्वृत्त होकर सबसे पहले मंदिर में जाकर देव दर्शन करना चाहिये ।

प्रश्न ४– देवदर्शन क्यों करना चाहिए ?

उत्तर– देवदर्शन करने से अपने आत्मस्वरूप का दर्शन होता है और पाप कर्मों का क्षय होता है ।

प्रश्न ५– मंदिर के लिये घर से कैसे निकलना चाहिए ?

उत्तर– स्नानादि करके, शुद्ध वस्त्र पहनकर, हाथों में अक्षत/चावल आदि उत्तम द्रव्य लेकर मंदिरजी के लिए घर से निकलना चाहिए । मौन पूर्वक, मार्ग में नीचे जीव-जन्तु देखते हुए चलना चाहिए । रास्ते में भी मन में णमोकार मंत्र का जाप करते रहना चाहिये ।

प्रश्न ६– मंदिरजी में प्रवेश किस प्रकार करना चाहिये ?

उत्तर– मंदिरजी में प्रवेश करने से पहले शुद्ध छने हुए प्रासुक जल से पैरों को धोना चाहिये । फिर तीन बार नि:सही नि:सही नि:सही बोलते हुए मंदिरजी में प्रवेश करके तीन बार ॐ जय जय जय बोलते हुए घंटा बजाना चाहिए ।

प्रश्न ७– मंदिरजी में जाकर सबसे पहले क्या करना चाहिए ?

उत्तर– मंदिरजी में जाकर सबसे पहले णमोकार मंत्र आदि पढ़ते हुए तीन परिक्रमा देना चाहिये ।

प्रश्न ८– तीन परिक्रमा क्यों देनी चाहिये ?

उत्तर– जन्म, जरा, मृत्यु को नाश करने की भावना से और सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र की प्राप्ति के लिए तीन परिक्रमा देनी चाहिये ।

प्रश्न ९– दर्शन करते समय क्या बोलना चाहिये ?

उत्तर– भगवान के दर्शन करते समय दर्शन स्तुति बोलनी चाहिये ।

प्रश्न १०– दर्शन स्तुति कौन सी है ?

उत्तर– दर्शन स्तुति अनेकों हैं उनमें से सरल सी एक यह है—

दर्शन स्तुति

प्रभु पतित पावन मैं अपावन, चरण आयो शरण जी ।
यो विरद आप निहार स्वामि, मेटि जामन मरण जी ।।१।।
तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी ।
या बुद्ध सेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी ।।२।।
भव विकट वन में कर्म वैरी, ज्ञान धन मेरो हर्‌यो ।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्‌यो ।।३।।
धन घड़ी यों धन दिवस यों ही, धन जनम मेरो भयो ।
अब भाग्य मेरो उदय आयो दरश प्रभु जी को लख लयो ।।४।।
छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नाशा पै धरै ।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण युत, कोटि रवि छवि को हरै ।।५।।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो ।
मो उर हरष ऐसो भयो, मनु रंक चिंतामणी लयो ।।६।।
मैं हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, वीनहुँ तुम चरण जी ।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहुँ तारण-तरण जी ।।७।।
जाँचू नहीं सुरवास पुनि, नर राज परिजन साथ जी ।
बुध जाचहूँ तुम भक्ति भव-भव, दीजिये शिवनाथ जी ।।८।।

प्रश्न ११– प्रथम छन्द का अर्थ क्या है ?

उत्तर– हे भगवान् ! आप पवित्र हैं, मैं पापी हूँ, आपके शरण में आया हूँ, मेरी विनती सुनकर मेरे जन्म-मरण का नाश करो ।

प्रश्न १२– दूसरे छन्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर– मैंने अभी तक आपको नहीं पहचाना, रागी-द्वेषी देवी-देवताओं की पूजा की । इस बुद्धि से मैंने संसार में घूमना ही हितकारी समझा ।

प्रश्न १३– तीसरे छन्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर– इस संसाररूपी वन में कर्म शत्रुओं (चोरों) ने मेरे ज्ञान धन को चुरा लिया है, जिससे मैं इष्ट (सच्चे सुख) वस्तु को भूलकर खोटी चारों गतियों में घूम रहा हूँ ।

प्रश्न १४– चौथे छन्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर– धन्य है आज का यह समय, धन्य दिन है, मेरा जन्म आज सफल हो गया । मेरा भाग्योदय हो गया जो आपके दर्शन मुझे मिल गये ।

प्रश्न १५– पाँचवें छन्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर– हे भगवान् ! आप कैसे हैं ? आपकी वीतराग छवि है । नग्न शरीर है । नाशा पर दृष्टि है, आप आठ प्रातिहार्य से युक्त हैं । अनंत गुणों से युक्त हैं । आपकी सुन्दरता (तेज) करोड़ों सूर्यों के तेज से भी ज्यादा है ।

प्रश्न १६– छठे छन्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर– आपके दर्शन करने से ही मेरा मिथ्यात्व दूर हो गया । सम्यक्त्व सूर्य आत्मा में प्रकट हो गया । आपको देखकर आज इतना हर्ष हो रहा है मानो किसी गरीब को चिंतामणि रत्न मिल गया हो ।

प्रश्न १७– सप्तम छन्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर– मैं हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर विनती करता हूँ कि हे प्रभो ! आप सब जगत में उत्तम हैं, तीन लोक के स्वामी हैं । स्वयं तिरकर दूसरों को भी तिराने वाले हैं ।

प्रश्न १८– आठवें छन्द का क्या अर्थ है ?

उत्तर– आपके दर्शन का फल मुझे स्वर्ग का सुख, मनुष्यों में राजा, माता-पिता, परिवार, धन आदि कुछ नहीं चाहिये । बुधजन कवि कहते हैं आपकी भक्ति मुझे हमेशा प्राप्त हो ।

प्रश्न १९– दर्शन स्तुति बोलने के बाद क्या करना चाहिए ?

उत्तर– दर्शन स्तुति बोलने के बाद जिनेन्द्र देव का अभिषेक और अष्टद्रव्य से पूजा करनी चाहिए। गुरु (मुनिराज) हों तो उनके दर्शन करके प्रवचनादि सुनना चाहिये, नहीं तो स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये ।

प्रश्न २०– पूजनादि के बाद क्या करना चाहिये ?

उत्तर– पूजनादि करने के बाद कुछ समय के लिये आत्मस्वरूप का चिंतन करना चाहिये एवं यह भी चिंतन करना चाहिये कि मुझमें और भगवान में राग और वैराग्य का अन्तर है । मैं भी भगवान् कब बनूँगा ऐसी भावना करना चाहिये ।

प्रश्न २१– मंदिर से घर को जाते समय क्या बोलना चाहिए ?

उत्तर– मंदिर से निकलते समय पुनः दर्शन की भावना भाते हुए सभी साधर्मीजनों की भक्ति की सराहना करते हुए अःसही, अःसही, अःसही शब्द उच्चारण करते हुए घर आना चाहिये ।

४–पंचपरमेष्ठी के मूलगुण

प्रश्न २२– अरहंत के ४६ मूलगुण कौन-कौन से हैं ?

दोहा– चौतीसों अतिशय सहित, प्रातिहार्य पुनि आठ ।
अनंत चतुष्टय गुण सहित, छीयालीसों पाठ ॥

उत्तर– ३४ अतिशय, ८ प्रातिहार्य और ४ अनंत चतुष्टय ये अरहन्त के ४६ मूलगुण हैं ।

प्रश्न २३– ३४ अतिशय कौन से हैं ?

उत्तर– १०अतिशय जन्म के, १० केवलज्ञान के और १४ देवों के द्वारा किए हुए । इस प्रकार अरहन्त के ३४ अतिशय होते हैं ।

प्रश्न २४– जन्म के १० अतिशय कौनसे हैं ?

अतिशय रूप सुगन्ध तन, नाहिं पसेव निहार ।
प्रियहितवचन अतुल्यबल, रुधिर श्वेत आकार ॥
लच्छन सहसरु आठ तन, समचतुष्क संठान ।
वज्रवृषभनाराचजुत, ये जनमत दश जान ॥

उत्तर– १. अत्यन्त सुन्दर रूप । २. सुगंधित शरीर ।
३. पसीना नहीं आना । ४. निहार रहित (मल-मूत्र नहीं होना)
५. हित-मित-प्रिय वचन । ६. अतुल्य बल ।
७. दूध के समान सफेद खून ।
८. समचतुरस्रसंस्थान । ९. वज्रवृषभनाराचसंहनन ।
१०. शरीर में १००८ लक्षणों का होना ।

प्रश्न २५– केवलज्ञान के १० अतिशय कौन से हैं ?

योजन शत इक में सुभिख, गगन गमन मुख चार ।
नहिं अदया उपसर्ग नहिं, नाहिं कवलाहार ॥
सब विद्या-ईश्वरपनो, नाहिं बढ़े नख केश ।
अनिमिष दृग छाया रहित, दश केवल के वेश ॥

उत्तर– १. १००-१०० योजन में सुभिक्ष होना ।
२. आकाश में गमन ।
३. चतुर्मुख (एक ही मुँह चारों ओर से चारमुख रूप दिखाई देना ।)

४. पूर्ण दया का होना ।
५. उपसर्ग नहीं होना ।
६. कवलाहार (ग्रासाहार) नहीं होना ।
७. सब विद्याओं के ईश्वर होना ।
८. नख, केश (बाल) नहीं बढ़ना ।
९. आँख की पलकों का नहीं झपकना ।
१०. शरीर की छाया नहीं पड़ना ।

प्रश्न २६–देवों द्वारा किये जाने वाले १४ अतिशय कौन से हैं ?

देवरचित हैं चारदश, अर्द्धमागधी भाष ।
आपसमाहीं मित्रता, निर्मल दिश आकाश ।।
होत फूल फल ऋतु सबै, पृथ्वी काच समान ।
चरण कमल तल कमल है, नभतैं जय जय बान ।।

मन्द सुगन्ध बयारि पुनि गन्धोदक की वृष्टि ।
भूमिविषै कण्टक नहीं, हर्षमयी सब सृष्टि ।।
धर्मचक्र आगे रहे, पुनि वसु मंगल सार ।
अतिशय श्री अरहन्त के, ये चौतीस प्रकार ।।

उत्तर–१- अर्द्धमागधी भाषा ।
२- परस्पर मित्रता ।
३- दिशाओं का निर्मल होना ।
४- आकाश का निर्मल होना ।
५- छहों ऋतुओं के फल-फूल एक समय में फलना ।
६- दर्पण के समान पृथ्वी का होना ।
७- स्वर्णमयी कमलों की रचना (भगवान के चरणों के नीचे २२५ कमलों की रचना)
८- देवों द्वारा आकाश में जय-ध्वनि ।
९- शीतल मंद सुगंध पवन चलना ।
१०- सुगंधित जलवृष्टि होना ।
११- भूमि कंटक रहित होना ।
१२- समस्त जीवों का आनन्दमयी होना ।
१३- धर्मचक्र आगे-आगे चलना ।
१४- अष्ट मंगल द्रव्यों का होना ।

प्रश्न २७– अष्ट मंगल द्रव्य कौन से हैं ?

उत्तर– १-छत्र ५-ध्वजा
२-चमर ६-पंखा
३-घंटा कलश ७-स्वस्तिक
४-झारी ८-दर्पण

प्रश्न २८– आठ प्रातिहार्य कौन से हैं ?

उत्तर– १-अशोक वृक्ष ५-दिव्यध्वनि
२-सिंहासन ६-पुष्पवृष्टि
३-तीन छत्र ७-चमर
४-भामण्डल ८-दुन्दुभि बाजे

प्रश्न २९– चार अनन्त चतुष्टय कौन से हैं ?

ज्ञान अनन्त अनन्त सुख, दरस अनन्त प्रमान ।
बल अनन्त अरहंत सो, इष्टदेव पहिचान ।।

उत्तर– (१) अनन्त दर्शन (२) अनन्त ज्ञान (३) अनन्त सुख (४) अनन्त वीर्य

प्रश्न ३०– अरहंत परमेष्ठी के किस कर्म के क्षय से कौन-सा गुण प्रगट होता है ?

उत्तर– अरहंत परमेष्ठी को—
ज्ञानावरणी कर्म के क्षय से अनंत ज्ञान ।
दर्शनावरणी कर्म के क्षय से अनंत दर्शन ।
मोहनीय कर्म के क्षय से अनंत सुख ।
अन्तराय कर्म के क्षय से अनंत वीर्य प्रकट होता है

प्रश्न ३१– अरहंत भगवान् और केवली भगवान् में क्या अन्तर है ?

उत्तर– अरहन्त और केवली भगवान् में कोई अन्तर नहीं है । दोनों नाम पर्यायवाची हैं ।

प्रश्न ३२– तीर्थंकर और अरहंत में क्या अन्तर है ?

उत्तर– तीर्थंकर के ४६ मूलगुण होते हैं, उनका शासन चलता है । तीर्थंकर के पूर्ण मूलगुण होते हैं । अरहंत अनेक

होते हैं किन्तु तीर्थंकर तो २४ ही होते हैं। जो तीर्थंकर होते हैं वे अरहंत ही होते हैं। अरहंत हैं वे तीर्थंकर हों भी, नहीं भी हों।

प्रश्न ३३– दिव्यध्वनि किनकी खिरती है?

उत्तर– अरहंत केवली की दिव्यध्वनि का नियम नहीं है किन्तु जो अरहंत तीर्थंकर हैं उनकी दिव्यध्वनि नियम से खिरती है।

प्रश्न ३४– अरहंत और तीर्थंकर अरहंत में और भी अन्तर है क्या?

उत्तर– हाँ, और भी अन्तर है—

१. जब तीर्थंकर भगवान गर्भ में आते हैं तब माता सोलह स्वप्न देखती है।

२. तीर्थंकर के ५, ३, २, कल्याणक होते हैं, अरहंत के ऐसा नियम नहीं है

३. तीर्थंकर के समवशरण की रचना होती है अरहंत के मात्र गंधकुटी की रचना होती है।

प्रश्न ३५–तीर्थंकर की माता के १६ स्वप्नों के नाम लिखिये?

उत्तर– १. हाथी।
२. सिंह
३. बैल।
४. कलश करती हुई लक्ष्मी।
५. दो मालाएँ।
६. उगता सूर्य।
७. चन्द्रमा।
८. मीन (मछली) का जोड़ा।
९. दो पूर्ण कलश।
१०. कमलयुक्त सरोवर
११. सागर।
१२. सिंहासन।
१३. देव विमान।
१४. धरणेन्द्र विमान।

१५. रत्न राशि।
१६. धूम रहित अग्नि।

प्रश्न ३६– पाँच कल्याणकों के नाम कौन से हैं?

उत्तर–

१-गर्भ कल्याणक	४-ज्ञान कल्याणक
२-जन्म कल्याणक	५-मोक्ष कल्याणक
३-तप कल्याणक	

प्रश्न ३७– अरहंत भगवान में कौन से १८ दोष नहीं होते हैं?

जन्म जरा तिरखा क्षुधा, विस्मय आरत खेद।
रोग शोक मद मोह भय, निद्रा चिन्ता स्वेद॥
रागद्वेष अरु मरणजुत, ये अष्टादश दोष।
नाहिं होत अरहन्त के, सो छवि लायक मोष।

उत्तर– अरहंत भगवान में निम्न १८ दोष नहीं होते हैं—

१-जन्म	१०-मद (मान)
२-बुढ़ापा	११-मोह
३-प्यास	१२-भय
४-भूख	१३-निद्रा
५-आश्चर्य	१४-चिन्ता
६-आरत	१५-स्वेद
७-दुःख	१६-राग
८-रोग	१७-द्वेष
९-शोक	१८-मरण

प्रश्न ३८– सिद्ध भगवान के ८ मूलगुण कौन से हैं?

समकित दरसन ज्ञान, अगुरुलघु अवगाहना।
सूच्छम वीरजवान, निराबाध गुण सिद्ध के॥

उत्तर–

१-सम्यक्त्व	५-अवगाहना
२-अनंत दर्शन	६-सूक्ष्मत्व
३-अनंत ज्ञान	७-अनंतवीर्य
४-अगुरुलघु	८-अव्याबाध

प्रश्न ३९– किस कर्म के क्षय से कौनसा गुण सिद्धों में प्रकट होता है ?

उत्तर– १-ज्ञानावरणी कर्म के क्षय से अनंतज्ञान गुण ।
२-दर्शनावरणी कर्म के क्षय से अनंतदर्शन-गुण ।
३-वेदनीय कर्म के क्षय से अव्याबाध गुण ।
४-मोहनीय कर्म के क्षय से सम्यक्त्व गुण ।
५-आयु कर्म के क्षय से अवगाहन गुण ।
६-नामकर्म के क्षय से सूक्ष्मत्व गुण ।
७-गोत्र कर्म के क्षय से अगुरुलघु गुण ।
८-अन्तराय कर्म के क्षय से अनंत वीर्य गुण सिद्धों में प्रकट होते हैं ।

प्रश्न ४०– आचार्य परमेष्ठी के ३६ मूलगुण कौन से हैं ?

द्वादश तप, दश धर्मजुत, पालैं पंचाचार ।
षट् आवशि त्रयगुप्ति गुन, आचारज पद सार ।।

उत्तर– १२ तप, १० धर्म, ५ पंचाचार, ६ आवश्यक और ३ गुप्ति ये ३६ मूलगुण आचार्य परमेष्ठी के होते हैं ।

प्रश्न ४१– बारह तप कौन से हैं ?

अनशन ऊनोदर करै, व्रतसंख्या रस छोर ।
विविक्तशयनासन धरै, कायकलेश सुठोर ।।
प्रायश्चित्त धर विनयजुत, वैयावृत स्वाध्याय ।
पुनि उपसर्ग विचारकै, धरै ध्यान मन लाय ।।

उत्तर– १-अनशन ७- प्रायश्चित्त
२-ऊनोदर ८- विनय
३-व्रतपरिसंख्यान ९- वैय्यावृत
४-रसपरित्याग १०- स्वाध्याय
५-विविक्तशय्यासन ११- व्युत्सर्ग
६-कायक्लेश १२- ध्यान

प्रश्न ४२– दस धर्म कौन से हैं ?

उत्तर– छिमा मारदव आरजव सत्यवचन चितपाग ।
संजम तप त्यागी सख आकिञ्चन तियत्याग ।।
१-उत्तम क्षमा ६- उत्तम संयम
२-उत्तम मार्दव ७- उत्तम तप
३-उत्तम आर्जव ८- उत्तम त्याग
४-उत्तम शौच ९- उत्तम आकिञ्चन
५-उत्तम सत्य १०- उत्तम ब्रह्मचर्य

प्रश्न ४३– पंचाचार कौन से हैं ?

दर्शन ज्ञान चरित्र तप, वीरज पंचाचार ।
गोपे मन वच काय को, गिन छत्तीस गुण सार ।।

उत्तर– १-दर्शनाचार ४-चारित्राचार
२-ज्ञानाचार ५-वीर्याचार
३-तपाचार

प्रश्न ४४– छः आवश्यक कौन से हैं ?

समता धर वन्दन करै, नाना थुति बनाय ।
प्रतिक्रमण स्वाध्याय जुत, कायोत्सर्ग लगाय ।।

उत्तर– १-समता ४-प्रतिक्रमण
२-वंदना ५-प्रत्याख्यान
३-स्तुति ६-कायोत्सर्ग

प्रश्न ४५– गुप्ति कौन सी हैं ?

उत्तर– १-मनोगुप्ति २-वचनगुप्ति ३-कायगुप्ति ।

प्रश्न ४६– उपाध्याय परमेष्ठी के २५ मूलगुण कौन से हैं ?

प्रथमहिं आचारांग गनि, दूजौ सूत्रकृतांग ।
ठाणअंग तीजौ सुभग, चौथौ समवायांग ।।
व्याख्यापण्णत्ति पाँचमौं, ज्ञातृकथा षट् जान ।
पुनि उपासकाध्ययन है, अंत:कृतदश ठान ।।
अनुत्तरण उत्पाददश, सूत्रविपाक पिछान ।
बहुरि प्रश्नव्याकरण जुत, ग्यारह अंग प्रमान ।।

उत्तर– ग्यारह अंग और १४ पूर्व ये २५ मूलगुण उपाध्याय परमेष्ठी के हैं ।

प्रश्न ४७– ११ अंग कौन से हैं ?

उत्तर–

१-आचारांग	७-उपासकाध्ययनांग
२-सूत्रकृतांग	८-अन्तकृद्दशांग
३-स्थानांग	९-अनुत्तरोपपादिकदशांग
४-समवायांग	१०-प्रश्नव्याकरणांग
५-व्याख्याप्रज्ञप्ति	११-विपाक सूत्रांग
६-ज्ञातृकथांग	

प्रश्न ४८– चौदह पूर्वों के नाम कौन से हैं ?

उत्पादपूर्व अग्रायणी, तीजो वीरजवाद ।
अस्तिनास्ति परवाद पुनि, पंचम ज्ञान प्रवाद ।।
छट्ठो कर्म प्रवाद है, सतप्रवाद पहिचान ।
अष्टम आत्मप्रवाद पुनि, नवमौं प्रत्याख्यान ।।
विद्यानुवाद पूरब दशम, पूर्वकल्याण महन्त ।
प्राणवाद किरिया बहुल, लोकबिन्दु है अन्त ।।

उत्तर–

१-उत्पाद पूर्व	८-कर्मप्रवाद पूर्व
२-आग्रायणी पूर्व	९-प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्व
३-वीर्यानुवाद पूर्व	१०-विद्यानुवाद पूर्व
४-अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व	११-कल्याणवाद पूर्व
५-ज्ञानप्रवाद पूर्व	१२-प्राणवाद पूर्व
६-सत्यप्रवाद पूर्व	१३-क्रियाविशाल पूर्व
७-आत्मप्रवाद पूर्व	१४-लोकबिन्दुसार पूर्व

प्रश्न ४९– साधु परमेष्ठी के २८ मूलगुण कौन से हैं ?

उत्तर– ५ महाव्रत, ५ समिति, ५ इंद्रिय निरोध, ६ आवश्यक, ७ शेष गुण=२८ मूलगुण ।

प्रश्न ५०– पाँच महाव्रत ५ समिति कौन से हैं ?

हिंसा अनृत तसकरी, अब्रह्म परिग्रह पाय ।
मनवच तनतैं त्यागवो, पंच महाव्रत थाय ।।

उत्तर– १-अहिंसा महाव्रत, २-सत्य महाव्रत, ३-अचौर्य महाव्रत, ४-ब्रह्मचर्य महाव्रत और ५-परिग्रहत्याग महाव्रत ।

५-समिति

ईर्या भाषा एषणा, पुनि क्षेपण आदान ।
प्रतिष्ठापनाजुत क्रिया, पाँचों समिति विधान ।।

१-ईर्या समिति २-भाषा समिति ३-एषणा समिति ४-आदाननिक्षेपण समिति ५-व्युत्सर्ग समिति ।

प्रश्न ५१– पाँच इन्द्रिय निरोध किसे कहते हैं ?

उत्तर– स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण इन पाँचों इन्द्रियों को वश में करना इंद्रिय निरोध है ।

प्रश्न ५२– छह आवश्यक कौन से हैं ?

उत्तर– १-समता २-वन्दना ३-स्तुति ४-स्वाध्याय ५-प्रतिक्रमण ६-कायोत्सर्ग ।

प्रश्न ५३– सात विशेष गुण कौन से हैं ?

सपरस रसना नासिका, नयन श्रोत्र का रोध ।
षट्आवशि मंजन तजन, शयन भूमिका शोध ।।
वस्त्रत्याग कचलुंच अरु, लघु भोजन इक बार ।
दाँतुन मुख में ना करें ठाड़े लेहिं अहार ।।

प्रश्न ५४– सात शेष गुण कौन से हैं ?

उत्तर– १-केशलोंच करना ।
२-नग्न रहना ।
३-स्नान नहीं करना ।
४-भूमि पर सोना ।
५-अदंत धावन (दाँतों को नहीं धोना) ।
६-खड़े-खड़े हाथ में आहार लेना ।
७-दिन में एक बार आहार लेना ।

प्रश्न ५५– पंच परमेष्ठियों के कुल कितने मूलगुण हैं ?

उत्तर– पंच परमेष्ठियों के कुल १४३ मूलगुण हैं ।

प्रश्न ५६– सिद्ध भगवान बड़े हैं फिर भी अरहंत को पहले नमस्कार क्यों किया है ?

उत्तर– संसारी जीवों को मोक्षमार्ग का उपदेश देते हैं इसलिये हितकारी होने से पहले अरहंत भगवान को नमस्कार किया है ।

प्रश्न ५७– अरहंत भगवान के ४६ मूलगुणों में आत्माश्रित गुण कितने हैं ?

उत्तर– अरहंत भगवान के ४६ मूलगुणों में से आत्माश्रित ४ गुण हैं ।

प्रश्न ५८– आत्माश्रित गुण कौन-कौन से हैं ?

उत्तर– १-अनंत दर्शन २-अनंत ज्ञान ३-अनंत सुख ४-अनंत वीर्य ये ४ गुण आत्माश्रित हैं ।

५–व्यसन

प्रश्न ५९– व्यसन किसे कहते हैं, वे कितने हैं ?

उत्तर– बुरी आदतों को व्यसन कहते हैं । व्यसन सात होते हैं—
१-जुआ खेलना, २-मांस खाना, ३-शराब पीना
४-शिकार करना, ५-वेश्या गमन करना, ६-चोरी करना
७-परस्त्री सेवन करना ।

प्रश्न ६०– जुआ खेलने से क्या हानि है ? कहानी बताइये ।

उत्तर– जुआ खेल सब अनर्थों की खानि है । एक समय युधिष्ठिर दुर्योधन के साथ जुआ खेलने लगे । खेल में सारी सम्पत्ति हार गये । अन्त में युधिष्ठिर ने द्रौपदी आदि को भी दाव पर रख दिया । दुर्योधन उन्हें भी जीत गये । इस हार से द्रौपदी, कुन्ती सबको अपमानित होना पड़ा । द्रौपदी के साथ पाँचों पाण्डवों को बारह वर्ष तक वनवास भी करना पड़ा । इस प्रकार जुआ बुरा व्यसन है । जो खेलता है उसका धन, सम्पत्ति, स्त्री आदि सब बिछुड़ जाते हैं और चारों तरफ अपमानित होना पड़ता है । बुद्धिमानों को कभी भी जुआ नहीं खेलना चाहिए । जुआ खेलने में युधिष्ठिर प्रसिद्ध हुए ।

प्रश्न ६१– और भी कौन-कौन सी बुरी आदतें जुआ व्यसन के अन्तर्गत आती हैं ?

उत्तर– कई ऐसी प्रतिदिन की आदतें हैं, जो जुआ व्यसन के ही अन्तर्गत आती हैं जैसे—सट्टा करना, हार-जीत लगाना, लाट्री के टिकट खरीदना, हँसी मजाक में शर्तादि लगाना, चौपड़, ताश के पत्ते, अंटी आदि खेल जिनमें पैसे लगाकर हार-जीत लगाई जाती है, सब ही जुआ के अन्तर्गत हैं ।

प्रश्न ६२– मांस खाने से क्या हानि है कहानी बताइये ?

उत्तर– मांस जीवों का वध करके तैयार किया जाता है, इस मांस में अनंतानंत जीव उत्पन्न हो जाते हैं जिसके खाने से बुद्धि नष्ट हो जाती हैं, दुर्गति में जाना पड़ता है ।

एक मांसलोलुपी की कहानी इस प्रकार है–

बक नाम का एक राजा मांसलोलुपी था, वह प्रतिदिन मांस खाता था । एक दिन रसोइया ने एक मासूम बालक का मांस पकाकर उसे दिया । राजा को वह बहुत अच्छा लगा । प्रतिदिन ऐसा ही मांस भोजन में मुझे मिलना चाहिये ऐसा उसने रसोइया से कहा । अब प्रतिदिन गाँव के छोटे-छोटे-बच्चों को मारकर रसोइया राजा को मांस खिलाने लगा । एक माँ का इकलौता पुत्र था अब उसकी बारी थी । वह हृदय फाड़-फाड़ कर करुण क्रंदन करती थी । भीम ने उसकी करुणापूर्ण आवाज सुनी और उसके संकट को दूर करने का संकल्प लिया ।

भीम और बक राजा का आपस में युद्ध हुआ । दुष्ट मांसभक्षी को भीम ने क्रोध में आकर उसकी पीठ पर एक लात मारी, पश्चात् उसका पाँव पकड़ कर उसको पछाड़ कर जमीन पर गिराया । मर कर वह तैंतीस सागर की आयु वाले घोर नरक में गया ।

प्रश्न ६३– क्या कोई और भी चीजें हैं जिनके खाने में मांस का दोष लगता है ।

उत्तर– हाँ, बाजार के अभक्ष, जलेबी, चाट आदि जो रात-दिन खुले रहते हैं, कई दिन की बनी वस्तुएँ जिन पर मच्छर, मक्खियाँ बैठते हैं, मर जाते हैं, सब मांस जैसे पिंड बन जाते हैं । इसके अलावा बहुत दिनों के बड़ी, पापड़, अचार, मुरब्बा भी खाने योग्य नहीं है । इसके अलावा बिस्किट, डबलरोटी, ब्रेड आदि भी बुरी वस्तुएँ हैं इन्हें खाने से मस्तिष्क कमजोर होता है । तथा मांस खाने का दोष लगता है ।

प्रश्न ६४– शराब पीने से हानि बताते हुए उसमें प्रसिद्ध आदमी की कथा बताइये ?

उत्तर– शराब अनंत जीवों के कलेवर से निकला जूस है इससे अनेकों हानियाँ हैं, एक कथा इस प्रकार है—

द्वारकापुरी के राजकुमारों ने नवक्रीड़ा को जाते हुए प्यास से पीड़ित होकर मद्य को पानी समझ कर पी लिया और उन्मत्त होकर नाचते-गाते हुए नगर को आ रहे थे कि मार्ग में द्वीपायन मुनि को देखकर उन पर पत्थरों की और खोटे शब्दों से गालियों की वर्षा की । क्रोध के वश मुनि ने चारों ओर से द्वारिकापुरी को जला दिया और मरकर दुर्गति गमन किया । यह सब शराब का ही दुष्फल है । इस सुरापान में "यादव" प्रसिद्ध हुए ।

शराब पीने से केन्सर, फेफड़ों में खराबी एवं नाना प्रकार के रोग हो जाते हैं । पागल के समान घूमता हुआ व्यक्ति सत्य-असत्य को भी नहीं जान पाता है ।

प्रश्न ६५– शिकार एवं उसका फल बताइये ?

उत्तर– अपने मनोरंजन के लिए बाण, गोली आदि से वन्य जीवों को मारना शिकार है, इसका फल अनंतकाल तक दुःख है ।

कथा इस प्रकार प्रसिद्ध है–

ब्रह्मदत्त नाम का राजा शिकार में प्रसिद्ध हुआ । एक बार जंगल में एक ध्यानी मुनिराज शिलातल पर ध्यान लगाये बैठे थे । ब्रह्मदत्त राजा शिकार के लिए वन को गया पर मुनिराज के प्रभाव से सफलता नहीं मिली । कई दिनों तक ऐसा होता रहा । मुनिराज पर उसे बहुत क्रोध हुआ । एक दिन मुनिराज आहार को गये तब उसने शिला को भयंकर अग्नि से तप्तायमान कर दिया । मुनिराज नियमानुसार जलती हुई उसी शिलातट पर ध्यान के लिए बैठ गये । ध्यान की विशुद्धता से मुनिराज को केवलज्ञान उत्पन्न हो गया । राजा मरकर सप्तम नरक में गया । इसीलिए शिकार कभी नहीं खेलना चाहिए ।

प्रश्न ६६– वेश्या सेवन व्यसन और उसका फल बताइये ?

उत्तर– कामवेदना से पीड़ित होकर सार्वजनिक व्यभिचारिणी स्त्रियों के पास जाना वेश्या व्यसन है।

एक व्यसनी की कथा इस प्रकार है–

एक धनाढ्य पुत्र चारुदत्त को कौन नहीं जानता जो भोला-भाला एवं धार्मिक संस्कारों से परिष्कृत था। परन्तु कुछ निमित्तों को पाकर वेश्या व्यसनी बन गया। पत्नी, माता-पिता, मित्रादि के समझाने पर भी वेश्या व्यसन को नहीं छोड़ सका। उसे यह लगने लगा कि सिर्फ वेश्या ही मुझे प्यार करती है बाकी सब झूठा प्रेम करते हैं। अब चारुदत्त का सारा पैसा वेश्या ने अपने कब्जे में कर लिया तो धीरे-धीरे प्रीति कम करने लगी। एक दिन स्वयं का खतरा समझकर उसे पाखाने में डलवा दिया। अत: बंधुओं, तन-मन-धन तीनों को नष्ट करने वाले वेश्यागमन से सदा दूर रहना चाहिये।

प्रश्न ६७–चोरी एवं उसका फल बताइये ?

उत्तर– किसी के यहाँ डाका डालकर, धोखा देकर उनकी वस्तुओं को हड़पना चोरी है। चोरी से अनेकों हानियाँ होती हैं

एक प्रसिद्ध कथा इस प्रकार है–

एक शिवभूति नामक ब्राह्मण सत्यघोष नाम से प्रसिद्ध था। वह कहता था मैं असत्य कभी नहीं बोलूँगा। यदि बोलूँगा तो छुरी से जिह्वा काट लूँगा। एक दिन समुद्रदत्त सेठ उसकी सच्चाई से प्रसन्न होकर अपने कीमती चार रत्न उसके पास रखकर व्यापार के लिए चला गया। बारह वर्ष बाद बहुत-सा धन लेकर आ रहा था। उसकी नाव डूब गई, सब धन नष्ट हो गया। सेठ ने सत्यघोष के पास आकर अपने चार रत्न माँगे। पुरोहित ने पागल कह कर घर से निकाल दिया। न्याय के लिए राजा के पास गया। राजा ने कुछ न सुना परन्तु रानी ने अपनी युक्ति से सत्यघोष की चोरी को पकड़ लिया और उसके घर से रत्न मँगवा लिये। राजा ने सत्यघोष के लिए प्रथम गोबर भक्षण करें या

दूसरा मुक्के (मुष्टिप्रहार) खाने का दण्ड दिया, तीसरा धन राजा को सौंप कर देश निकाला।

सत्यघोष तीनों ही दंड सहन नहीं कर पाया, मरकर राजा के भण्डार में सर्प हुआ। इसलिये कभी भी चोरी नहीं करना चाहिये।

प्रश्न ६८– परस्त्री सेवन एवं उसका फल बताइये ?

उत्तर– कामबाण से पीड़ित होकर विवाहित व्यभिचारिणी स्त्रियों के पास आना-जाना परस्त्री सेवन व्यसन है। इस परस्त्री सेवन में लंकाधिपति रावण प्रसिद्ध हुए। माता-पिता की आज्ञा को मानने वाले महापुरुष रामचन्द्रजी १४ वर्ष वनवास के लिये गये। साथ में पत्नी सीता, भाई लक्ष्मण थे। परस्त्री के मोह में आसक्त होकर रावण सीता को छल से हर कर लंका ले आया। सीता को विषय भोगों के लिए बहुत मनाया पर शीलवती दृढ़ थी। रामचन्द्र जी हनुमान से सीताजी का पता लगाकर लंका पहुँचे। रावण को बहुत समझाया पर वह नहीं माना। अंत में भाई विभीषण भी राम की सेवा में जा मिला। राम और रावण का घमासान युद्ध हुआ। युद्ध में रावण अनेक कुटुम्बियों सहित मारा गया।

रावण की बुद्धि परस्त्री के मोह में नष्ट हो गई थी। इस कारण हित के वचन भी उसे नहीं सुहाते थे। उसका तन, धन, जन सब नष्ट हो गया। बुद्धिमानों को परस्त्री को दूर से ही त्याग देना चाहिये। माँ-बहन-बेटी के समान उनसे व्यवहार करना चाहिये।

प्रश्न ६९– पैसों से ताश (पत्ते) खेलना, सट्टा, मटका आदि एवं लॉटरी के टिकट खरीदना क्या इनको भी व्यसन कहते हैं ?

उत्तर– हाँ ! जितने भी खेल पैसा लगाकर खेले जाते हैं, जितना भी कार्य हार-जीत की बाजी लगाकर किया जाता है वह सब कुव्यसन कहलाता है क्योंकि पैसों से खेलने वाला व्यक्ति एक दिन पूरे धन को बर्बाद कर देता

है। सभी उसे बुरी निगाह से देखते हैं। जुआरी व्यक्ति में सभी खोटे व्यसन सहज में ही आ जाते हैं।

प्रश्न ७०– मांस खाना बुरा व्यसन क्यों है ? इससे क्या शरीर में ताकत आती है ?

उत्तर– मांस खाने से शरीर में ताकत नहीं आती बल्कि बुद्धि धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है। मांस खाने से शरीर में रोग हो जाते हैं। मृतक या जिन्दे जीव का कलेवर खाने वाला महाहिंसक क्रूर दुष्ट कहलाता है। मांस खाना मनुष्यों का काम नहीं है वह तो राक्षसों का काम है।

प्रश्न ७१– मांस त्याग करने वाला अंडा खा सकता है या नहीं ? क्या वह शाकाहारी होता है ?

उत्तर– नहीं, अंडा शाकाहारी नहीं होता। अण्डा नवजात शिशु का कलेवर है। इसके खाने में मांस के बराबर ही पाप लगता है। इसलिये अण्डे से बनी वस्तुएँ मांस त्यागी को कभी भी नहीं खाना चाहिये।

प्रश्न ७२– शराब तो फलों के रसों से बनती है इसे बुरा क्यों कहा गया है ?

उत्तर– शराब ताजे फलों के रस से नहीं बनती है। अनेक फलादि पदार्थों को सड़ा-गलाकर यह तैयार की जाती है। सड़े हुए फलों में जीव राशि उत्पन्न हो जाती है। उन जीवों के कलेवर से शराब तैयार होती है। शराब पीने से बुद्धि नष्ट हो जाती है शराबी व्यक्ति पागल की तरह घूमता-फिरता है। शरीर की शक्ति खो देता है। अधिक शराब पीने वाले व्यक्ति मर भी जाते हैं इसलिये शराब एक बहुत खराब वस्तु है। इसको पीने का त्याग करना चाहिये।

प्रश्न ७३– क्या सभी नशा उत्पन्न करने वाली वस्तुएँ व्यसन हैं ?

उत्तर– हाँ, नशीली वस्तुएँ भाँग, तम्बाकू, कोका-कोला, बीड़ी, सिगरेट आदि सब बुरे व्यसन हैं। शरीर और आत्मा

दोनों की उन्नति नहीं होने देते हैं। इनसे शरीर रोगी हो जाता है और बुद्धि नष्ट हो जाती है।

प्रश्न ७४– किसी को गाली देना, निंदा करना आदि भी व्यसन है क्या ?

उत्तर– हाँ, किसी को गाली देने से दूसरे का दिल दुखता है, दूसरे की निंदा करने से भी दूसरे का दिल दुखता है इससे महा हिंसा होती है। यह बुरी आदतें भी व्यसन हैं। हँसी-मजाक में खोटे शब्द बोलना, शरीर की कुचेष्टा आदि भी व्यसन हैं।

प्रश्न ७५– अन्य भी कौन-सी बुरी आदतें हैं जो व्यसन कहलाती हैं बताइये ?

उत्तर–

(१) स्कूल में जाकर दूसरे की पेन, कॉपी, पेन्सिल बिना पूछे ले लेना, चुरा लेना।

(२) परीक्षा में प्रश्न का उत्तर। हल याद नहीं होने पर चिट करना, दूसरे की नकल करना भी एक बुरी आदत है, इससे बुद्धि का विकास रुक जाता है।

(३) अधिक सिनेमा देखना, खोटे नृत्यादि देखना, खोटे गीतादि सुनना ये भी बुरी आदतें हैं।

(४) अंटी, चोपड़, शतरंज आदि खेलना, अभक्ष्य, भक्षण करना, बिना प्रयोजन इधर-उधर घूमना, अधिक बोलना सभी बुरी आदतें व्यसन कहलाती हैं। सभी बुरे कार्य दुख देने वाले हैं इनका सभी को त्याग करना चाहिये।

(५) गुस्सा करना, जिद्द करना, मान करना, बड़ों की आज्ञा नहीं मानना ये सभी खोटी आदतों में शामिल हैं।

प्रश्न ७६– बुरी आदतों से (व्यसनों से) छूटने के उपाय बताइये ?

उत्तर– बुरी आदतों से छूटने के लिये अशुभ को छोड़कर शुभ कार्य करने की आदत डालनी चाहिये। जैसे—देवदर्शन, पूजा भक्ति आदि जिनसे पुण्य बंध होकर कर्म का क्षय होता है।

प्रश्न ७७– ताश (पत्ते) खेलने की आदत छोड़ने के लिए क्या उपाय है ?

उत्तर– पत्ते खेलते समय तत्त्वचिंतन करते जाइये बुरी आदत छूट जायेगी । पत्तों में १-१ पत्ता कीमती है हमें शिक्षा देता है ।

इक्का कहता है	—	आत्मा एक है ।
दुक्की कहती है	—	संसारी और मुक्त के भेद से जीव के दो भेद हैं ।
तिक्की कहती है	—	रत्नत्रय मोक्ष का मार्ग है ।
चौकी कहती है	—	४ आराधनाएँ मुक्ति की कारण हैं ।
पंजी कहती है	—	संसार में ५ परमेष्ठी ही शरण हैं ।
छक्की कहती है	—	छः द्रव्यों से विश्व बना है ।
सत्ती कहती है	—	७ तत्त्वों का श्रद्धान सम्यग्दर्शन है ।
अट्ठी कहती है	—	८ सम्यग्दर्शन के अंग हैं ।
नहला कहता है	—	९ नव पदार्थों में मैं जीव पदार्थ हूँ ।
दहली कहती है	—	दस धर्म ही मुक्ति के सोपान हैं ।
गुलाम कहती है	—	शरीर आत्मा का गुलाम है ।
बेगम कहती है	—	मैं शरीर का भोक्ता नहीं हूँ ।
बादशाह कहती है	—	शरीर कर्म, द्रव्य कर्म, नोकर्म, भावकर्मरूपी शत्रुओं का नाश करने वाला मैं बादशाह हूँ ।

जो ऐसी ताश खेलता है वह भेदविज्ञानी कर्म का नाश कर मुक्ति प्राप्त करता है ।

प्रश्न ७८– अधिक बोलना, अधिक घूमना इनसे छूटने का उपाय बताइये ?

उत्तर– व्यर्थ अधिक बोलने की आदत छोड़ने के लिए बहुत प्रकार से भगवान् की स्तुतियाँ, भजन, पूजनादि बोलना चाहिये एवं अधिक घूमना है तो मन्दिर जाइये, तीर्थों की वन्दना कीजिये, गुरुओं के पास जाइये जिससे पुण्यबंध होकर मुक्ति का मार्ग मिल जायेगा ।

प्रश्न ७९– उपन्यासादि पढ़ना, सिनेमा देखना आदि बुरी आदतों को छोड़ने के क्या उपाय हैं ?

उत्तर– महापुरुषों के चरित्र, सती अंजना, चन्दनादि की कथाएँ पढ़नी चाहिये । पद्मपुराण, श्रेणिकचरित्र, श्रीपाल, मैना सुन्दरी आदि के सुन्दर कथानक पढ़ना चाहिये जिससे खोटे उपन्यासादि पढ़ने की आदत छूट सकती है ।

तीर्थों के सुन्दर-सुन्दर चित्र देखिये, तीर्थों की फिल्म हृदय में खींचकर सुबह-शाम ध्यान का बटन दबा दीजिये । किसी सिनेमा हाल में जाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी ।

प्रश्न ८०– परीक्षा में नकल करने की बुरी आदत कैसे छूट सकती है ?

उत्तर– दूसरे की नकल करने से अपना सही भी गलत हो सकता है । और चिट करने से पकड़ने पर अपमान भी सहन करना पड़ता है इसलिए अच्छे विद्यार्थी को प्रतिदिन स्कूल में ध्यान से गुरुजी के मुख से पढ़ाया हुआ सुनना, घर आकर पुनः पढ़ना चाहिये । रोजाना प्रातः उठकर पढ़ाई करना चाहिये । बारह महीने अच्छी पढ़ाई करने पर नकल अपने आप छूट जाती है ।

प्रश्न ८१– शराब पीने की आदत कैसे छूट सकती है ?

उत्तर– जिनभक्तिरूपी शराब का नशा जिसे चढ़ जाता है वह कभी भी शराब नहीं पीता है । जिनेन्द्रदेव की भक्ति, स्तुति का नशा चढ़ते ही सारे नशे उतर जाते हैं । इसलिए भक्तामर, सहस्रनामरूपी भक्ति का रस पीने से शराब पीने की आदत छूट सकती है ।

प्रश्न ८२– जुआ, हार-जीत से छूटने के उपाय बताइये ?

उत्तर– कर्मों से हार-जीत करिये, कर्मों से जुआ खेलिये । जैसे—

१- आज हम क्रोध नहीं करेंगे यदि किया तो नमक नहीं खायेंगे ।

२- राजू पन्द्रह मिनट स्वाध्याय करता है तो हम एक घण्टे स्वाध्याय करेंगे ।

३- राजू दो घण्टे ध्यान करता है तो उसे हरायेंगे ४ घंटे ध्यान करेंगे । यह सच्ची हार-जीत कर्मों को काटकर मुक्ति ले जायेगी ।

४- राजू सौ रुपये का दान करता है तो मैं १००० रुपये का दान करूँगा आदि जुआ से छूटने के उपाय हैं ।

प्रश्न ८३– परस्त्री सेवन की आदत छोड़ने का उपाय क्या है ।

उत्तर– परस्त्री को माँ-बहिन के समान समझना चाहिये । आत्मा में रमण करना चाहिये । जिनवाणी माता के साथ रमण करने वाला कभी भी परस्त्री सेवन नहीं कर सकता है ।

६–भावना

प्रश्न ८४– भावना किसे कहते हैं ? ये कितनी होती हैं ?

उत्तर– बार-बार चिन्तन करने का नाम भावना है, इनका दूसरा नाम अनुप्रेक्षा भी है । यह १२ होती हैं ।

प्रश्न ८५– भावनाओं के नाम किस प्रकार हैं ?

उत्तर– १-अनित्य भावना २-अशरण भावना ३-संसार भावना ४-एकत्व भावना ५-अन्यत्व भावना ६-अशुचि भावना ७-आस्त्रव भावना ८-संवर भावना ९-निर्जरा भावना १०-लोक भावना ११-बोधिदुर्लभ भावना १२-धर्म भावना ।

प्रश्न ८६– अनित्य भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार ॥

राजा, राणा, छत्रपति हाथियों पर बैठने वाले सब एक दिन समाप्त हो जाने वाले हैं । कोई भी मृत्यु से बचने वाला नहीं है । यह अनित्य भावना है ।

प्रश्न ८७– अशरण भावना कौन-सी है ?

उत्तर– दलबल देवी देवता, मात-पिता परिवार ।
मरती बिरिया जीव को, कोई न राखनहार ।

इस संसार में जीव को कोई भी शरण नहीं है । मरते समय माता-पिता, देवी-देवता कोई भी बचाने वाला नहीं है । यह अशरण भावना है ।

प्रश्न ८८– संसार भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान ।
कबहुँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥

संसार में सभी जीव दुखी हैं, कोई पैसे से दुखी है, कोई इच्छा से दुखी है । कहीं भी सुख नहीं है ।

प्रश्न ८९– एकत्व भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– आप अकेला अवतरै, मरे अकेला होय ।
यों कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय ।।

इस संसार में जीव अकेला ही जन्म लेता है अकेला ही मरता है कोई भी इसका साथी नहीं है ।

प्रश्न ९०– अन्यत्व भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय ।
घर संपत्ति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय ।।

संसार में कोई भी अपना नहीं है । यह शरीर भी अपना नहीं है, तो घर, धन आदि कैसे अपने हो सकते हैं ।

प्रश्न ९१– अशुचि भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– दिपै चाम-दादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह ।
भीतर या सम जगत में, अवर नहीं घिन-गेह ।।

यह शरीर हाड़-मांस से बना हुआ है । इसके समान कोई घृणित पदार्थ संसार में नहीं है ।

प्रश्न ९२– आस्रव भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– मोह नींद के जोर, जगवासी घूमै सदा ।
कर्म चोर चहुँ और, सरवस लूटैं सुध नहीं ।।

मोह से युक्त होकर जीव संसार में घूमता है और कर्म इसे लूट लेते हैं ।

प्रश्न ९३– संवर भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– सतगुरु देय जगाय, मोहनींद जब उपशमें ।
तब कछु बनैं उपाय, कर्म-चोर आवत रुकैं ।।

मोह मन्द होता है तब गुरु के उपदेश से कुछ उपाय करने पर कर्म चोरों का आना रुक जाता है ।

प्रश्न ९४– निर्जरा भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– ज्ञान-दीप-तप तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर ।
या विध बिन निकसै नहीं, पैठे पूरब चोर ।।
पञ्च महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार ।
प्रबल पंच इन्द्री विजय, धार निर्जरा सार ।।

ज्ञान और चारित्र को धारण करने से कर्म की निर्जरा होती है अर्थात् ज्ञानरूपी दीपक में तपस्यारूपी तेल भरकर सभी प्रकार के भ्रमों को तिलांजलि देकर स्वस्वरूप रूप घर का शोधन करके महाव्रतादि के बल से कर्मों का खिपाना ही निर्जरा है ।

प्रश्न ९५– लोक भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– चौदह राजू उतंग नभ, लोक पुरुष-संठान ।
तामें जीव अनादितैं, भरमत है बिन ज्ञान ।।

१४ राजू ऊँचा लोक है इसमें जीव ज्ञान के बिना अनादिकाल से भ्रमण कर रहा है ।

प्रश्न ९६– बोधिदुर्लभ भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– धन-कन कंचन राज सुख, सबहि सुलभकर जान ।
दुर्लभ है संसार में, एक जथारत ज्ञान ।।

संसार में धन, सम्पत्ति, स्त्री, राज्य सबका मिलना सरल है पर आत्मज्ञान, सच्चा ज्ञान मिलना कठिन है ।

प्रश्न ९७– धर्म भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर– जाँचे सुर-तरु देय सुख, चिन्तत चिन्ता रैन ।
बिन जाचै बिन चिन्तये, धर्म सकल सुख दैन ।।

कल्पवृक्ष तो माँगने पर चीज देता है पर धर्म बिना माँगे ही सब सुख देता है ।

प्रश्न ९८– संसार से छुड़ाने वाली और कौन-सी भावनायें हैं ?

उत्तर– संसार से छुड़ाने वाली सोलह कारण भावनाएँ हैं । और मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, माध्यस्थ ये ४ भावनाएँ भी हैं ।

प्रश्न ९९– आत्मचिन्तन की भावना कैसे करना चाहिए, उसका क्या लाभ है ?

उत्तर– मैं भी पंचपरमेष्ठी के समान हूँ । मुझ में और सिद्ध में द्रव्य से भेद नहीं हैं, पर्याय का भेद है । वह भेद कब मिटे और मैं भी साक्षात् सिद्ध बन जाऊँ ऐसी भावना को रोजाना चिन्तन करने वाला जीव स्वयं भी सिद्ध भगवान् बन जाता है ।

प्रश्न १००–सोलहकारण भावनाओं के नाम बताइये ?

उत्तर– १-दर्शन विशुद्धि २-विनय सम्पन्नता ३-शील व्रतेष्वनतिचार ४-अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग ५-संवेग ६-शक्ति तस्त्याग ७-शक्तितस्तप ८-साधु समाधि ९-वैय्यावृति १०-अर्हद्भक्ति ११-आचार्य भक्ति १२-बहुश्रुत भक्ति १३-प्रवचन भक्ति १४-आवश्यकापरिहाणि १५-मार्ग प्रभावना १६-प्रवचन वात्सल्य ये १६ कारण भावनाएँ हैं ।

प्रश्न १०१–सोलहकारण भावनाओं का फल बताइये ?

उत्तर–

दर्श विशुद्धि धरै जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महा धारै जो प्राणी, शिव वनिता की सखी बखानी ।।१।।
शील सदा दृढ़ जो नर पालैं, सो औरन की आपद टालैं ।
ज्ञानाभ्यास करै मनमाहीं, ताके मोह महातम नाहीं ।।२।।
जो संवेग भाव विस्तारैं, सुरग मुकतिपद आप निहारैं ।
दान देय मन हरष विशेखै, इह भव जस परभव सुख देखै ।।३।।
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरैं करम शिखर गुरुभाषा ।
साधुसमाधि सदा मनलावैं, तिहुँ जग भोग भोगि शिव जावैं ।।४।।
निशदिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भवनीर तिरैया ।
जो अर्हंत भगति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै ।।५।।
जो आचारज भगति करै हैं, सो निरमल आचार धरै हैं ।
बहुश्रुतवंत भगति जो करई, सो नर संपूरन श्रुत धरई ।।६।।
प्रवचन भगति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानंद दाता ।
षट् आवश्यक काल जो साधै, सो ही रत्नत्रय आराधै ।।७।।
धरम प्रभाव करै जे ज्ञानी, तिन शिवमारग रीति पिछानी ।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै ।।८।।
एहि सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय ।
देव इन्द्र नरवंद्यपद द्यानत शिव पद होय ।।

जो सोलह भावनाओं को भाता है वह देव इन्द्रों के द्वारा वंदनीय तीर्थंकर पद प्राप्त करके मुक्ति पाता है ।

७–मेरी भावना

प्रश्न १०२–

उत्तर–

जिसने रागद्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया,
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया ।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो,
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो ।।१।।

विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्यभाव धन रखते हैं,
निज पर के हित साधन में जो, निशदिन तत्पर रहते हैं ।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं,
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं ।।२।।

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे,
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ।
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ,
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ ।।३।।

अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ,
देख दूसरों की बढ़ती पर, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ।
रहै भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ,
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ ।।४।।

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे,
दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा श्रोत बहे ।
दुर्जन-क्रूर कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ।।५।।

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बनै जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे ।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ।।६।।

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवै या जावै,
लाखों वर्षों तक जीऊँ, या मृत्यु आज ही आ जावे ।
अथवा कोई कैसा भी भय, या लालच देने आवै,
तो भी न्यायमार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावै ॥७॥

होकर सुख में मग्न न फूलै, दु:ख में कभी न घबरावै,
पर्वत-नदी-श्मशान-भयानक, अटवी से नहीं भय खावै ।
रहै अडोल अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावै,
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहनशीलता दिखलावै ॥८॥

सुखी रहैं सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावै,
वैर पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावैं ।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावै,
ज्ञान चरित्र उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावै ॥९॥

ईति-भीति व्यापै नहि जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे,
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे ।
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करे,
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्वहित किया करे ॥१०॥

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे,
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे ।
बन कर सब 'युगवीर' हृदय से, देशोन्नति रत रहा करे,
वस्तुस्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करे ॥११॥

प्रश्न १०२–मेरी भावना में किसका वर्णन है ?

उत्तर– मेरी भावना में सच्चे देव, गुरु और धर्म का वर्णन है । प्रथम छन्द में सच्चे देव (अरहंत) का स्वरूप है । द्वितीय छन्द में सच्चे गुरु का स्वरूप है एवं शेष छन्दों में सच्चे धर्म का स्वरूप है ।

८–जिनवाणी स्तुति

ब्र० ज्ञानानन्दजी कृत

केवलि कन्ये वाङ्मय गंगे, जगदम्बे अघनाशो हमारे ।
सत्य स्वरूपे मंगलरूपे मन मन्दिर में तिष्ठो हमारे ॥टेक॥

जम्बूस्वामी गौतम गणधर, हुए सुधर्मा पुत्र तुम्हारे ।
जगते स्वयं पार व्है करके, दे उपदेश बहुत जन तारे ॥१॥

कुन्दकुन्द अकलंक देव अरु, विद्यानन्दि आदि मुनि सारे ।
तब कुल-कुमुद-चन्द्रमा ये शुभ, शिक्षामृत दे स्वर्ग सिधारे ॥२॥

तूने उत्तम तत्त्व प्रकाशे, जग के भ्रम सब क्षय कर डारे ।
तेरी ज्योति निरखी लज्जावश, रवि शशि छिपते नित्य विचारे ॥३॥

भवभय पीड़ित व्यथित चित्त जन, जब जों आये शरण तिहारे ।
छिन भर में उनके तब तुमने, करुणा करि सब संकट टारे ॥४॥

जब तक विषय कषाय नशै नहिं, कर्मशत्रु नहिं जय निवारे ।
तब तक ज्ञानानन्द रहे नित, सब जीवनि में समता धारे ॥५॥

९–दर्शन पाठ

पं० दौलतरामजी कृत

सकल ज्ञेय ज्ञायक, तदपि, निजानन्द रस लीन ।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरि रज रहस विहीन ॥१

जय वीतराग विज्ञान पूर, जय मोह तिमिर को हरन सूर ।
जय ज्ञान अनन्तानन्त धार, दृग सुख वीरज मण्डित अपार ॥२

जय परम शान्ति मुद्रा समेत, भवि जन को निज अनुभूति हेत ।
भवि भागन वश जोगे वशाय, तुम धुनि व्है सुनि विभ्रम नशाय ॥३

तुम गुण चिन्तत निज पर विवेक, प्रगटे विघटे आपद अनेक ।
तुम जगभूषण दूषण वियुक्त, सब महिमा युक्त विकल्प मुक्त ॥४

अविरुद्ध शुद्ध चेतन सरूप, परमात्म परम पावन अनूप ।
शुभ-अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वाभाविक परिणतिमय अक्षीण ॥५

अष्टादश दोष विमुक्त धीर, स्व चतुष्टयमय राजत गम्भीर ।
मुनि गणधरादि सेवत महंत, नव केवल लब्धि रमा धरन्त ॥६

तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जाहि जेहैं सदीद ।
भवसागर में दुख छार वारि, तारण को अवर न आप टारि ॥७

यह लख निज दुख गद हरण काज, तुम ही निमित्त करण इलाज ।
जाने ताते मैं शरण आय, उचरो निज दुख जो चिरलहाय ॥८

मैं भ्रम्यो अपन को बिसर आप, अपनाये विधि फल पुण्य पाप ।
निज को पर को कर्ता पिछान, पर में अनिष्टता इष्ट ठान ॥९

आकुलित भयो अज्ञान धारि, ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वारि ।
तन परिणति में आपो चितार, कबहुँ न अनुभव स्वपद सार ॥१०

तुमको जाने बिन जो कलेश, पायो सो तुम जानत जिनेश ।
पशु नारक नर सुरगति मंझार, भव धर-धर मर्‌यो अनन्त वार ॥११

अब काल लब्धि बल तैं दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुश्याल ।
मन शांति भयो मिटि सकल द्वन्द, चाख्यो स्वातम रस दुख निकन्द ॥१२

तातै ऐसी अब करहु नाथ, बिछुड़े न कभी तुम चरण साथ ।
तुम गुणगण को नहिं छेव देव, जगतारण को तुम विरद एव ॥१३

आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परिणति न जाय ।
मैं रहूँ आप में आप लीन, सो करो होऊँ जो निजाधीन ॥१४

मेरे न चाह कछु और ईश, रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश ।
मुझ कारज के कारण सु आप, शिव करहु हरहु मन मोह ताप ॥१५

शशि शांति करण तप हरण हेत ! स्वयमेव तथा तुम कुशल देत ।
पीवत पीयूष ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभवते भव नशाय ॥१६

त्रिभुवन तिहुँ काल मझार कोय, नहीं तुम बिन निज सुखदाय होय ।
मोउर यह निश्चय भयो आज, दुख जलधि उतारन तुम जहाज ॥१७

दोहा

तुम गुणगण मणि गणपति, गणत न पावहिं पार ।
'दौल' स्वल्पमति किम कहै, नमों त्रियोग सम्हार ॥

११-जिनवाणी भक्ति

अकेला ही हूँ मैं करम सब आये सिमिटिकें ।
लिया है मैं तेरा शरण अब माता सटकिकें ।
भ्रमावत है मोको-करम दुःख देता जनम का ।
करों भक्ति तेरी हरो दुःख माता भ्रमन का ॥१॥

दुःखी हुआ भारी, भ्रमत फिरता हूँ जगत् में ।
सहा जाता नाहीं अकल घबरानी भ्रमन में ॥
करों क्या माँ मोरी, चलत वश नाहीं मिटन का ।
करों भक्ति तेरी, हरो दुःख माता भ्रमन का ॥२॥

सुनो माता मोरी, अरज करता हूँ दरद में ।
दुःखी जानों मोकों, डरप कर आयो शरन में ॥
कृपा ऐसी कीजै दरद मिट जावै मरन का ।
करों भक्ति तेरी हरो दुःख माता भ्रमन का ॥३॥

पिलावै जो मोकों सुबुधिकर प्याला अमृत का ।
मिटावै जो मेरा सकल दुःख सारा फिरन का ।
परो पाँवा तेरे हरो दुःख सारा फिकर का ।
करों भक्ति तेरी हरो दुःख माता भ्रमन का ॥४॥

सवैया

मिथ्या-तम नाशवे को, ज्ञान के प्रकाशवे को ।
आपा-पर भासवे को भानुसी बखानी है ॥
छहों द्रव्य जानवे को बन्धविधि भानवे को ।
स्वपर पिछानवे को परम प्रमानी है ॥५॥

अनुभौ बतायवे को जीव के जतायवे क्रों ।
काहू न सतायवे को भव्य उर आनी है ।।
जहाँ तहाँ तारवेको पारके उतारवे को ।
सुख विसतारवे को ये ही जिनवाणी है ।।६।।

दोहा

यह जिनवाणी थुति, अल्प बुद्धि परमान ।
पन्नालाल विनती करे, दे माता मोहि ज्ञान ।।७।।
हे जिनवाणी भारती, तोहि जपों दिन रैन ।
जो तेरा शरना गहै, सो पावै सुख चैन ।।८।।
जा वानी के ज्ञानतैं, सूझै लोकालोक ।
सो वानी मस्तक चढ़ो, सदा देत हों धोक ।।९।।
।। इति ।।

●

चौबीस तीर्थंकर निर्वाण स्थली व कूट नाम

आदिनाथजी		(कैलाश पर्वत)
अजितनाथजी	सिद्धवर कूट	(सम्मेदशिखरजी)
संभवनाथजी	धवलकूट	(सम्मेदशिखरजी)
अभिनन्दनजी	आनन्दकूट	(सम्मेदशिखरजी)
सुमतिनाथजी	अविचलकूट	(सम्मेदशिखरजी)
पद्मप्रभजी	मोहनकूट	(सम्मेदशिखरजी)
सुपार्श्वनाथजी	प्रभासकूट	(सम्मेदशिखरजी)
चन्द्रप्रभजी	ललितकूट	(सम्मेदशिखरजी)
पुष्पदन्तजी	सुप्रभकूट	(सम्मेदशिखरजी)
शीतलनाथजी	विद्युतवरकूट	(सम्मेदशिखरजी)
श्रेयांसनाथजी	संकुलकूट	(सम्मेदशिखरजी)
वासुपूज्यजी	चम्पापुर	(मन्दारगिरी)
विमलनाथजी	सुवीरकूट	(सम्मेदशिखरजी)
अनन्तनाथजी	स्वयंभूकूट	(सम्मेदशिखरजी)
धर्मनाथजी	सुदत्तवरकूट	(सम्मेदशिखरजी)
शांतिनाथजी	कुन्दप्रभकूट	(सम्मेदशिखरजी)
कुन्थुनाथजी	ज्ञानधरकूट	(सम्मेदशिखरजी)
अरहनाथजी	नाटककूट	(सम्मेदशिखरजी)
मल्लिनाथजी	संबलकूट	(सम्मेदशिखरजी)
मुनिसुव्रतनाथजी	निर्जराकूट	(सम्मेदशिखरजी)
नमिनाथजी	मित्रधरकूट	(सम्मेदशिखरजी)
नेमिनाथजी		(गिरनारजी)
पारसनाथजी	सुवर्णभद्रकूट	(सम्मेदशिखरजी)
महावीर स्वामी		(पावापुरी)

माँ जिनवाणी स्तुति

माँ जिनवाणी ममता न्यारी, प्यारी-प्यारी गोद है थारी ।
आंचल में मुझको तू रखले, तू तीर्थंकर राजदुलारी ॥ टेक ॥

वीर प्रभो पर्वत निर्झरणी, गौतम के मुख कंठ झरी हो ।
अनेकान्त और स्याद्वाद की, अमृतमय माता तुम ही हो ।
भव्यजनों की कर्णपिपासा, तुझसे शमन हुई जिनवाणी ॥ 1 ॥
माँ जिनवाणी ....

सप्तभंग मय लहरों से माँ, तू ही सप्त तत्व प्रकटाये ।
द्रव्य गुणों अरु पर्यायों का, ज्ञान आत्मा में करवाये ॥
हेय ज्ञेय अरु उपादेय का, भान हुआ तुझसे जिनवाणी ॥ 2 ॥
माँ जिनवाणी ....

तुझको जानूं तुझको समझूं, तुझसे आतम बोध को पाऊं ।
तेरे आंचल में छिप-छिपकर दुग्धपान अनुयोग का पाऊं ।
मां बालक की रक्षा करना, मिथ्यातम को हर जिनवाणी ॥ ३ ॥
माँ जिनवाणी ....

धीर बनूं मैं वीर बनूं माँ, कर्मबली को दल-दल जाऊं ।
ध्यान करूं स्वाध्याय करूं बस, तेरे गुण को निशदिन गाऊं ।
अष्ट करम की हान करे यह, अष्टम क्षिति को दे जिनवाणी ॥ 4 ॥
माँ जिनवाणी ....

ऋषि मुनि यति सब ध्यान धरे माँ, शरण प्राप्त कर कर्म हरें ।
सदा मात की गोद रहूं मैं, ऐसा शिर आशीष फले ।
नमन करे ''स्याद्वादमती'' नित, आत्म सुधारस दे जिनवाणी ॥ 5 ॥
माँ जिनवाणी ....

गणिनी आर्यिका स्याद्वादमती